विद्यार्थियों में साहित्य का संचार करने को प्रयासरत : कुलपति

कविता उत्सव में श्रीलाल शुक्ल इफको साहित्य सम्मान के लिए साहित्यकार जयनंदन को सम्मानित करते कुलपति व अन्य अतिथि। कार्यक्रम में मौजूद लोग। जागरण

जासं, जमशेदपुर : कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गंगाधर पंडा ने कहा कि कोल्हान विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों को साहित्य व कविता को लेकर जागरूक करने के उद्देश्य से सेमिनार आदि का आयोजन कर रहा है। एलबीएसएम कालेज का यह कविता उत्सव विद्यार्थियों में एक नई ऊर्जा प्रदान करेगा। संसार में मनुष्य के रूप में जन्म लेना दुर्लभ है और मनुष्य जन्म लेकर कवि होना और भी दुर्लभ है। शास्त्रों में कहा गया है कि जो साहित्य, कला और संगीत को प्यार नहीं करता, वह सींग और पूंछविहीन पशु के समान होता है।

मौका था शनिवार को एलबीएसएम कालेज में साहित्य अकादमी व एलबीएसएम कालेज, जमशेदपुर द्वारा आयोजित पूर्वी क्षेत्रीय कविता उत्सव का उद्घाटन समारोह का। समारोह का उद्घाटन करते हुए कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गंगाधर पंडा ने कहा कि कविता का करुणा से गहरा संबंध है। आदि कवि वाल्मीकि क्रौंच-वध से आहत होकर फूट-फूटकर रोये और उनके मुंह से कविता पंक्ति निकल गई। कविता की शुरुआत करुण रस से हुई। वाल्मीकि के रामायण से ही प्रेरित होकर तुलसीदास ने रामचरित मानस लिखा और दक्षिण भारत में कई रामायण लिखे गए। उन्होंने इस अवसर पर भगवान जगन्नाथ पर संस्कृत की एक 'अष्टपदी' ओड़िया में पढ़कर सुनाई।

कविता उत्सव के विशिष्ट अतिथि कोल्हान विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. जयंत शेखर ने भक्ति कविता की क्षमताओं की चर्चा करते हुए कहा कि आजादी के 75 साल बाद झारखंड में साहित्य अकादमी द्वारा क्षेत्रीय भाषा का कविता उत्सव हो रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत इस आयोजन का होना काफी अर्थपूर्ण है। साहित्य अकादमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार 'देवेश' ने स्वागत वक्तव्य में कहा कि किसी भी रचनाकार का सबसे बड़ा सम्मान यही है कि उसकी अभिव्यक्ति को सुनी जाए।

- एलबीएसएम कालेज की ओर से आयोजित पूर्वी क्षेत्र कविता उत्सव में दिखा क्षेत्रीय भाषाओं का महत्व
- डा. जयंत बोले- क्षेत्रीय भाषा के कवियों को एकजुट करने में लग गए 75 साल, राज्य के लिए दुर्भाग्य

साहित्यकार जयनंदन का किया गया सम्मान

उद्घाटन सत्र में विभिन्न भाषाओं के आमंत्रित कवियों, उद्घाटनकर्ता और विशिष्ट अतिथि के अतिरिक्त जमशेदपुर के प्रख्यात कथाकार सह साहित्यकार जयनंदन को श्रीलाल शुक्ल सम्मान के चयनित किए जाने के लिए सम्मानित किया गया। उद्घाटन सत्र का संचालन प्रो. विनय कुमार गुप्ता और डा. संचिता भुईसेन व धन्यवाद ज्ञापन डा. मौसुमी पाल ने किया।

आत्महत्या तो करते हो, मगर दूसरों को प्रमाण पत्र में क्यों फंसाते हो

जासं, जमशेदपुर : एलबीएसएम कालेज में आयोजित पूर्वी भारत के क्षेत्रीय कविता उत्सव के दूसरे सत्र में माटी, किसान, पर्यावरण, स्त्री-प्रश्न से संबंधित कविताओं से छात्र, साहित्यकार व अतिथि रूबरू हुए। दूसरे सत्र में संताली के साहित्यकार सह साहित्य अकादमी में संताली के संयोजक मदन मोहन सोरेन की अध्यक्षता में असमिया के उत्तम कुमार बरदले, बांग्ला के कमल चक्रवर्ती, बोडो की रश्मि चौधुरी, अंग्रेजी की कुपरा राय, मैथिली के शिव कुमार टिल्लू, मणिपुरी के एम.ए. हाशिम, नेपाली के राजा पुनियानी, ओड़िआ के सौभाग्यवंत राणा, हो के डोबरो बुड़ीउली व भोजपुरी में संध्या सिन्हा ने कविता पाठ किया। सभी ने अपनी क्षेत्रीय भाषा में कविता पाठ किया व इसका अनुवाद भी पढ़कर सुनाया। बोडो कवियित्री ने कहा आत्महत्या तो करते हो मगर दूसरों को प्रमाण पत्र में क्यों फंसाते हो, क्यों लिखकर मौत को गले लगाते हो। असमिया कवि ने कहा शहर को सब पूछते हैं, मिट्टी को कोई नहीं पूछता।

न्याय व क्रांति के बिना नहीं होती कविता : मिथेश्वर अग्निमित्र

कविता उत्सव के तीसरे सत्र के अध्यक्ष प्रो. मिथेश्वर अग्निमित्र ने कहा कि इस आयोजन के जरिए झारखंड में सांस्कृतिक इतिहास का एक पन्ना लिखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि जो कवि नहीं हैं, कविता उनके भीतर भी होती है, उनके भीतर जो अनुभूतियां और भाव हैं, उनको मेहनत करके व्यक्त करना चाहिए। उन्होंने कहा कि न्याय व क्रांति के बिना कविता नहीं होती। इस सत्र में संध्या सिन्हा ने खोरठी व भाखतोमनी के खिड़की शीर्षक कविताओं का पाठ किया। कविता उत्सव में साहित्य जगत के दो विद्वान 50 साल बाद मिले। इस दौरान वे एक दूसरे से गले मिले। एक मैथिली के डा. विद्यानंद झा विदिक तो दूसरे हिंदी के प्रो. मिथेश्वर अग्निमित्र।

एलबीएसएम कालेज में साहित्य व कविता के मंच पर 50 साल बाद मिले दो विद्वान मैथिली के डा. विद्यानंद झा विदिक व हिंदी के प्रखर वक्ता डा. मिथेश्वर अग्निमित्र।